

संपादकीय

भाषिक सद्भाव और बहुभाषी समालोचना का नवदिगन्त

भारत की आत्मा उसकी भाषाओं में बसती है। यहाँ की भाषाएँ केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि स्मृति, संस्कृति, संघर्ष और सृजन की जीवित परंपराएँ हैं। हिंदी, ओड़िया, मराठी और संथाली—ये चारों भाषाएँ भिन्न भौगोलिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों से उपजी हैं, फिर भी इनके मूल में मानवीय संवेदना, लोकबोध और सहअस्तित्व का साझा सूत्र विद्यमान है। ऐसे समय में, जब भाषाई संकीर्णता और एकांगी विमर्श का खतरा बढ़ रहा है, 'वाग्धारा' का प्रथम अंक बहुभाषी सद्भाव और समालोचनात्मक संवाद का एक सशक्त नवदिगन्त प्रस्तुत करता है।

'वाग्धारा' का उद्देश्य किसी एक भाषा को केंद्र में रखकर अन्य भाषाओं को परिधि पर रखना नहीं, बल्कि सभी भाषाओं को समान गरिमा के साथ संवाद की मेज़ पर आमंत्रित करना है। बहुभाषी समालोचना का अर्थ केवल समालोचना नहीं, बल्कि दृष्टियों का आदान-प्रदान, सौंदर्यबोध की तुलना, और वैचारिक अंतःक्रिया है। जब हिंदी की आलोचनात्मक परंपरा ओड़िया की काव्य-संवेदना से, मराठी की सामाजिक चेतना संथाली के लोकजीवन से संवाद करती है, तब साहित्य के नए अर्थ-वृत्त निर्मित होते हैं।

आज की शोध-परंपरा में बहुभाषिकता एक आवश्यकता बन चुकी है। एकभाषिक अध्ययन सीमित दृष्टि प्रदान करता है, जबकि बहुभाषी समालोचना साहित्य को उसके व्यापक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में समझने का अवसर देती है। 'वाग्धारा' इसी व्यापकता को लक्ष्य बनाती है—जहाँ आदिवासी ज्ञान-परंपराएँ, लोकसाहित्य, आधुनिक विमर्श, स्त्रीवादी दृष्टि, उत्तर-औपनिवेशिक चिंतन और समकालीन सामाजिक प्रश्न समान रूप से स्थान पाते हैं।

संथाली जैसी जनजातीय भाषा की उपस्थिति 'वाग्धारा' को विशिष्ट बनाती है। यह केवल प्रतिनिधित्व का प्रश्न नहीं, बल्कि भारतीय साहित्यिक अध्ययन को उसकी जड़ों से जोड़ने का प्रयास है। लोकगीत, मिथक, स्मृतियाँ और मौखिक परंपराएँ—ये सब मिलकर भारतीय साहित्य की बहुरंगी छवि को पूर्ण करते हैं। इसी प्रकार, ओड़िया और मराठी की समृद्ध साहित्यिक विरासत हिंदी के साथ संवाद में आकर राष्ट्रीय साहित्यिक चेतना को और सुदृढ़ करती है।

'वाग्धारा' का प्रथम अंक शोधार्थियों, लेखकों और पाठकों—सभी से संवाद की अपेक्षा करता है। यह पत्रिका प्रश्न पूछती है, विमर्श खोलती है और पुल बनाती है—भाषाओं के बीच, परंपरा और आधुनिकता के बीच, केंद्र और हाशिए के बीच। हमारा विश्वास है कि भाषिक सद्भाव केवल सहिष्णुता नहीं, बल्कि सक्रिय सहभागिता से संभव है।

आइए, 'वाग्धारा' के साथ इस बहुभाषी यात्रा में सहभागी बनें—जहाँ हर भाषा एक धारा है और सभी धाराएँ मिलकर भारतीय साहित्य की व्यापक, प्रवहमान नदी का निर्माण करती हैं। यही इस पत्रिका का संकल्प है, और यही इसके प्रथम अंक की वैचारिक प्रस्तावना।

संपादन मंडली

